ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 13 June 2020

परिवार: मुख्याधारा के यथार्थ

[1]Dr. Rekha Kumari [1]Dr. Deep Narayan Singh

[1]Veer kunwar Singh University Arrah Bihar

सार: परिवार एक 'सम्मिलित आवास वाले रक्त संबंधियों का समूह परिवार कहलाता है'। मानव जीवन की यात्रा का शुभारंभ परिवार से ही होता है एवं मनुष्य की प्रारंभिक एवं मूलभूत सुविधाओं की पूर्ति परिवार से ही होती है। भारतीय समाज में दो प्रकार के परिवार अस्तित्व में हैं- (1) एकल परिवार एवं (2) संयुक्त परिवार। एकल परिवार का सिद्धांत बिलकुल नया है जबकि संयुक्त परिवार की संकल्पना बहुत प्राचीन है व भारतीय समाज में रची-बसी है। संयुक्त परिवार एकल परिवारों का समूह है जिसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य की जिम्मेवारी, सुविधाएं एवं सुख-दुख साझा होते हैं। इसमें एक मुखिया होता है, जो परिवार की नीतियों एवं अनुशासन का संचालन करता है।

Email: rekhadn@1974gmail.com

Mobile: +91 9973044221

परिचय: भारतीय समाज में दो प्रकार के संयुक्त परिवार अस्तित्व में हैं। प्रथम वो परिवार जिनके सभी एकल परिवारों की रसोई साझा चूल्हा होती है एवं दूसरे वो जिनका आवास एक ही घर या परिसर में होता लेकिन रसोई अलग होती है। प्रथम प्रकार के संयुक्त परिवार तो विलुप्तप्राय: है लेकिन दूसरे प्रकार के परिवार अभी भी भारतीय संस्कृति और मान्यताओं को सहेजे हुए हैं। भारतीय समाज हमेशा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की विचारधारा से संचालित रहा है एवं इसी भावना का मूर्तरूप संयुक्त परिवार है। रामराज्य से लेकर कृष्ण के साम्राज्य तक संयुक्त परिवार की संकल्पना का पोषण हुआ है। संयुक्त परिवार उस वटवृक्ष जैसा है जिसे स्वयं नहीं मालूम कि उसकी जड़ें कितनी और कहां तक फैली हैं। संयुक्त परिवार में शिशु के लालन-पालन से लेकर उसके समाजीकरण की प्रक्रिया का उद्भव होता है एवं उचित मार्गदर्शन एवं देखरेख में उसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास होता है।[1]

 Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 13 June 2020

देश के बदलते सामाजिक एवं आर्थिक आबादी संतुलन के साथ परिवारों के रहन-सहन की दशाएं भी चुनौतीपूर्ण हो गई हैं। 80 के दशक के बाद ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों का पलायन बहुत तेजी से हुआ है।[2] बच्चों की पढ़ाई एवं रोजगार की तलाश में संयुक्त परिवार टूट-टूटकर शहरों की ओर स्थानापन्न हो गए। हमने दादी के नुस्खे, दादा की कहानियां, ताऊ का सयानापन, ताई की झिड़की, काकी का दुलार, काका की डांट और माता-पिता का अपने बच्चों को दूर से बढ़ते हुए देखने का सुख खो दिया है।[3]

संयुक्त परिवार में पला-बढ़ा व्यक्ति बहुमुखी प्रतिभा का धनी होता है, क्योंकि वह नैतिक एवं विविध संस्कारों व व्यक्तित्वों के बीच पनपता है। उसका व्यवहार एकांगी नहीं होता है तथा वह संयुक्त परिवार के सभी सदस्यों के व्यवहारों का सम्मिश्रण होता है।[4] सभी से कैसे सामंजस्य बिठाना है, कैसे अपने स्वार्थ के इतर दूसरों का ख्याल रखना है, सामाजिकता कैसे निभानी है, प्रेम-विश्वास एवं सहयोग इन सारे संस्कारों का विद्यालय सिर्फ संयुक्त परिवार ही है। अकेलेपन एवं बेरोजगारी से बचने में संयुक्त परिवार की अहम भूमिका है। संयुक्त परिवार व्यक्ति में राष्ट्र निर्माण के संस्कार डालता है। वह सिखाता है कि राष्ट्र का निर्माण उस राष्ट्र के लोगों ने जो प्राप्त किया है उससे नहीं वरन दूसरों के लिए जो छोड़ा है, जो त्याग किया है, उससे होता है। संयुक्त परिवार हमें सामाजिक एवं नैतिक संस्कारों की जड़ों तक ले जाता है, जहां से व्यक्ति में अनुशासन एवं स्वतंत्रता की भावना का उदय होता है। सामाजिक परंपराओं एवं धार्मिक मान्यताओं को आचरण में उतारने का कार्य भी संयुक्त परिवार करता है। सामाजिक अवसरों की प्रथाएं, उत्सवों के मनाने के तरीके, सामाजिक आचरणों की सीख, प्राकृतिक नियमों का पालन, स्वास्थ्य संबंधी जानकारियां, पर्यावरण संरक्षण आदि सभी व्यावहारिक ज्ञान हमें संयुक्त परिवार के बुजुर्गों से प्राप्त होता है। दादी सासों एवं सासों द्वारा अपनी बहुओं एवं बेटियों को बहुत सारी स्त्रीजन्य जीवनोपयोगी बातें झिड़ककर, प्रेम से एवं अपने आचरण से संयुक्त परिवार में सिखाई जाती हैं। इस प्रकार पीढ़ियों में व्यावहारिक ज्ञान का हस्तांतरण स्वत: हो जाता है।[5] आज परिवार अधिनायकवादी आदर्शों से प्रजातांत्रिक आदर्शों की ओर बढ़ रहे हैं जिससे संयुक्त परिवारों के लिए अस्तित्व का संकट

 Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 13 June 2020

पैदा हो गया है।[6] जहां एकल परिवार में स्वार्थ की भावना पनपती है, संकट के समय परिवार की स्थिति दयनीय हो जाती है, शिशुओं की देखभाल सही तरीके से नहीं हो पाती है एवं उचित परामर्श के अभाव में अपव्यय होता है व सहयोग की भावना नहीं पनपती है, वहीं इसके इतर संयुक्त परिवार धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक समरसता व पर्यावरण संतुलन को व्यक्ति के व्यक्तित्व में समाहित कर उसे पूर्ण विकास के पथ पर अग्रसर करता है। संयुक्त परिवार टूटने के कारण वृद्धजनों की समस्याएं विराट होती जा रही हैं। वृद्धजनों को भावनात्मक, सामाजिक, वित्तीय एवं स्वास्थ्य संबंधी कठनाइयों से गुजरना पड़ रहा है एवं उनमें असुरक्षा की भावना घर कर रही है। पारिवारिक रिश्तों को सहेजने, समेटने व संरक्षित करने का प्रतिष्ठान संयुक्त परिवार है।[7]

निष्कर्ष: आज भी संयुक्त परिवार को ही सम्पूर्ण परिवार माना जाता है। वर्तमान समय में भी एकल परिवार को एक मजबूरी के रूप में ही देखा जाता है। हमारे देश में आज भी एकल परिवार को मान्यता प्राप्त नहीं है। औद्योगिक विकास के चलते संयुक्त परिवारों का बिखरना जारी है। परन्तु आज भी संयुक्त परवर का महत्त्व कम नहीं हुआ है। संयुक्त परिवार के महत्त्व पर चर्चा करने से पूर्व एक नजर संयुक्त परिवार के बिखरने के कारणों ,एवं उसके अस्तित्व पर मंडराते खतरे पर प्रकाश डालने का प्रयास करते हैं।संयुक्त परिवारों के बिखरने का मुख्य कारण है रोजगार पाने की आकांक्षा .बढती जनसँख्या तथा घटते रोजगार के कारण परिवार के सदस्यों को अपनी जीविका चलाने के लिए गाँव से शहर की ओर या छोटे शहर से बड़े शहरों को जाना पड़ता है और इसी कड़ी में विदेश जाने की आवश्यकता पड़ती है।.परंपरागत कारोबार या खेती बाड़ी की अपनी सीमायें होती हैं जो परिवार के बढ़ते सदस्यों के लिए सभी आवश्यकतायें जुटा पाने में समर्थ नहीं होता .अतः परिवार को नए आर्थिक स्रोतों की तलाश करनी पड़ती है .जब अपने गाँव या शहर में नयी सम्भावनाये कम होने लगती हैं तो परिवार की नयी पीढ़ी को राजगार की तलाश में अन्यत्र जाना पड़ता है। अब उन्हें जहाँ रोजगार उपलब्ध होता है वहीँ अपना परिवार बसाना होता है । क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं होता की वह नित्य रूप से अपने परिवार के मूल स्थान पर जा पाए । कभी कभी तो सैंकड़ो किलोमीटर दूर जाकर रोजगार करना पड़ता है। संयुक्त परिवार के टूटने का दूसरा महत्वपूर्ण कारण नित्य बढ़ता उपभोक्तावाद है । जिसने व्यक्ति

 Copyright • 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 13 June 2020

को अधिक महत्वकांक्षी बना दिया है अधिक सुविधाएँ पाने की लालसा के कारण पारिवारिक सहनशक्ति समाप्त होती जा रही है ,और स्वार्थ परता बढती जा रही है। अब वह अपनी खुशिया परिवार या परिजनों में नहीं बल्कि अधिक सुख साधन जुटा कर अपनी खुशिया ढूंढता है ,और संयुक्त परिवार के बिखरने का कारण बन रहा है । एकल परिवार में रहते हुए मानव भावनात्मक रूप से विकलांग होता जा रहा है। जिम्मेदारियों का बोझ ,और बेपनाह तनाव सहन करना पड़ता है। परन्तु दूसरी तरफ उसके सुविधा संपन्न और आत्म विश्वास बढ़ जाने के कारण उसके भावी विकास का रास्ता खुलता है।

संदर्व सूचि:

1. रविंद्र कुमार सिंह संत काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता पृष्ठ 30- 31
2. निराला (राग विराग) कुकुरमुत्ता पृष्ठ 145
3. रविंद्र कुमार सिंह संत काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता पृष्ठ 30- 31
4. मंजूर सैयद प्रभाकर मच्चे के उपन्यासों में सामाजिक चेतना पृष्ठ 20
5. प्रेमचंद गोदान पृष्ठ 18
6. गुलाब राय काव्य के रूप पृष्ठ 6
7. डॉक्टर लाल साहब सिंह, हिंदी उपन्यासों में सामाजिक चेतना पृष्ठ 6

 Copyright • 2020 Authors